Drishti IAS

करेंट अफेयर्स मध्य प्रदेश

अप्रैल (संग्रह)

2024

Drishti, 641, First Floor, Dr. Mukharjee Nagar, Delhi-110009
Inquiry (English): 8010440440, Inquiry (Hindi): 8750187501
Email: help@groupdrishti.in

अनुक्रम

मध्य प्रदेश **3**

- मध्य प्रदेश में पेप्सिको इंडिया का फ्लेवर प्लांट 3
- विश्व का सबसे पुराना भूत मेला मध्य प्रदेश में 3
- कुनो राष्ट्रीय उद्यान 4
- शक्ति-संगीत और नृत्य का उत्सव 5
- शक्ति - संगीत और नृत्य का उत्सव 5
- उज्जैन व्यापार मेले का प्रथम संस्करण 6
- गुड़ी पड़वा 7
- चतुर्थ वर्ष के UG छात्रों के लिये नया पाठ्यक्रम 7
- विश्व के सबसे बड़े फ्लोटिंग सोलर प्लांट को नुकसान 8
- स्वच्छता के प्रति जागरूकता 9
- मध्य प्रदेश में मौसम विभाग ने जारी की चेतावनी 9
- सतपुड़ा टाइगर रिज़र्व में यूरेशियन ओटर रेडियो-टैग किया 10
- मध्य प्रदेश में नदियों का प्रदूषण 12
- MP के यूनेस्को डिजिटल नवाचार 13
- अश्वगंधा 14
- भूमि संघर्ष पर वन अधिकार अधिनियम का प्रभाव 14
- मध्य प्रदेश में विशिष्ट नस्ल की गायें 15
- मध्य प्रदेश में राष्ट्रीय उद्यान 16
- भोजशाला-कमाल मौला परिसर 18
- मध्य प्रदेश क्रूज़ पर्यटन को बढ़ावा देगा 19

नोट :

मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश में पेप्सिको इंडिया का फ्लेवर प्लांट

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में पेप्सिको इंडिया (PepsiCo India) ने देश में अपनी विस्तार योजनाओं के तहत **मध्य प्रदेश के उज्जैन में एक फ्लेवर मैन्युफैक्चरिंग फैसिलिटी** स्थापित करने के लिये 1,266 करोड़ रुपए का निवेश करने की घोषणा की है।

प्रमुख बिंदु:

- 22 एकड़ में फैला यह प्लांट भारत में पेप्सिको के पेय पदार्थ (Beverage) उत्पादन को बढ़ाने, **रोज़गार सृजन करने और स्थानीय अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव डालने में महत्त्वपूर्ण भूमिका** निभाएगा।
  - इस संयंत्र का निर्माण कार्य **इसी वर्ष शुरू होने तथा वर्ष 2026 की पहली तिमाही में चालू होने** की उम्मीद है।
  - यह यूनिट भारत में कंपनी की दूसरी फ्लेवर मैन्युफैक्चरिंग फैसिलिटी होगी। **पेप्सिको की पहली फ्लेवर मैन्युफैक्चरिंग फैसिलिटी पंजाब के चन्नो में** है।
- पेप्सिको इंडिया ने कहा कि अपने वैश्विक सतत् लक्ष्यों के अनुरूप, नई विनिर्माण फैसिलिटी पूरी तरह से नवीकरणीय ऊर्जा **स्रोतों द्वारा संचालित** होगी, जिससे **प्रतिदिन 1.9 मीट्रिक टन कार्बन फुटप्रिंट की महत्त्वपूर्ण कमी** आएगी।
- **शून्य तरल निर्वहन तकनीक (Zero Liquid Discharge Technology)** के साथ, संयंत्र का लक्ष्य **लगभग 90% समग्र जल दक्षता हासिल करना**, जल संसाधनों का नैतिक रूप से उत्तरदायी प्रबंधन सुनिश्चित करना और फैसिलिटी में उपयोग किये जाने वाले 100% पानी की पुन:पूर्ति करना है।

नोट:
रिवर्स ऑस्मोसिस सहित शून्य तरल निर्वहन/ज़ीरो लिक्विड डिस्चार्ज (ZLD) के घटक, जल और लवण के व्यापक पुन: उपयोग तथा पुनर्प्राप्ति को सक्षम करते हैं एवं यह प्रक्रिया ताज़े जल की आवश्यकताओं को कम करती है।

विश्व का सबसे पुराना भूत मेला मध्य प्रदेश में

चर्चा में क्यों ?

भूत मेला, एक 400 वर्ष पुराना मेला है जो प्रत्येक वर्ष मध्य प्रदेश के मलाजपुर (बैतूल ज़िले) गाँव में आयोजित किया जाता है।

- यह मेला पूरे विश्व से **तीर्थयात्रियों, रहस्यवादियों और जिज्ञासु यात्रियों** को आकर्षित करता है।

मुख्य बिंदु:

- प्रत्येक वर्ष **बसंत पंचमी के अवसर पर** हिंदू संत **"गुरुसाहब बाबा"** की समाधि पर मेला लगता है।
- यह भूत मेला तीन सप्ताह तक मनाया जाता है और **बुरी आत्माओं से ग्रस्त व्यक्ति** ऐसी नकारात्मक ऊर्जाओं से छुटकारा पाने के लिये गाँव में आते हैं।
- किंवदंती के अनुसार, मलाजपुर भूत मेला 18वीं शताब्दी से प्रचलन में है जब **जादुई शक्तियों वाले** देवजी महाराज नामक एक व्यक्ति ने गाँव का दौरा किया था। अंततः उन्होंने आत्माओं को वश में करना और भूत बाधाओं को दूर करना शुरू कर दिया।

नोट :

कुनो राष्ट्रीय उद्यान

चर्चा में क्यों ?

मध्य प्रदेश के श्योपुर ज़िले में स्थित **कुनो राष्ट्रीय उद्यान** में पर्यटक **चीतों** को देखने के लिये पहुँच रहे हैं।

चीता (Cheetah)

सामान्य नाम: एशियाई चीता

वैज्ञानिक नाम: *एसिनोनिक्स जुबेटस (Acinonyx jubatus)*

- *एसिनोनिक्स जुबेटस जुबेटस* (एशियाई चीता)
- *एसिनोनिक्स जुबेटस वेनाटिकस* (अफ्रीकी चीता)

विशेषताएँ:

- विश्व का सबसे तेज दौड़ने वाला स्तनधारी
- चीते अपनी क्षमता के बजाय गति के लिये जाने जाते हैं; जब ये अपने शिकार का पीछा करते हैं तो यह केवल **200-300** मीटर के लिये तथा **1** मिनट से कम अवधि का होता है।
- शेर, लकड़बग्घे और तेंदुए जैसे अन्य शक्तिशाली शिकारियों से प्रतिस्पर्द्धा से बचने के लिये चीते मुख्य रूप से दिन के दौरान शिकार करते हैं।

अफ्रीकी चीता बनाम एशियाई चीता:

- **अफ्रीकी:** हल्के भूरे और सुनहरे रंग की **त्वचा; एशियाई चीते से मोटी**
  - ***चेहरों पर धब्बों तथा रेखाओं की प्रधानता***
  - *पूरे अफ्रीका महाद्वीप में पाए जाते हैं*
  - ***IUCN रेडलिस्ट में स्थिति: सुभेद्य (Vulnerable)***
- **एशियाई:** अफ्रीकी चीतों से थोड़े छोटे
  - ***हल्के पीले रंग की त्वचा: शरीर के नीचे विशेष रूप से पेट पर अधिक बाल***
  - ***केवल ईरान में पाए जाते हैं;*** *देश द्वारा यह दावा किया जाता है कि अब यहाँ केवल* ***12*** *चीते शेष हैं।*
- **वर्ष 1952:** एशियाई चीता को **आधिकारिक रूप से भारत से विलुप्त** घोषित किया गया
  - ***IUCN रेडलिस्ट में स्थिति: घोर संकटग्रस्त (Critically Endangered)***

एशियाई चीता

अफ्रीकी चीता

भारत में चीतों का पुनर्वास:

- **राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) की 19वीं बैठक में MoEF-CC** द्वारा **"भारत में चीता पुनर्वास के लिये कार्ययोजना"** जारी की गई थी। (जनवरी **2022**)
  - *इसी तरह की एक कार्ययोजना सर्वप्रथम वर्ष* ***2009*** *में प्रस्तावित की गई थी।*
- सितंबर **2022** में **नामीबिया से आठ चीतों को भारत में पुनर्वास हेतु लाया गया।**
  - *इन आठ चीतों को* ***मध्यप्रदेश के कुनो-पालपुर राष्ट्रीय उद्यान*** *में स्थानांतरित किया जाएगा।*
- नामीबिया से भारत में चीतों का स्थानांतरण **विश्व भर में किसी बड़े मांसाहारी जानवर की पहली स्थानांतरण परियोजना है।**

DRISHTI IAS

नोट :

मुख्य बिंदु:

- **कुनो राष्ट्रीय उद्यान नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका** से स्थानांतरित कई चीतों का निवास स्थान है।
  - **वर्ष 1952 में देश में विलुप्त** घोषित किये गए **चीतों की जीवसंख्या** को बहाल करने हेतु भारत में चीता पुनरुत्पादन परियोजना औपचारिक रूप से 17 सितंबर, 2022 को शुरू हुई।
  - यह परियोजना राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) द्वारा **मध्य प्रदेश वन विभाग,** भारतीय वन्यजीव संस्थान (WII) तथा नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका के चीता विशेषज्ञों के सहयोग से कार्यान्वित की गई है।

शक्ति-संगीत और नृत्य का उत्सव

चर्चा में क्यों ?

देश में मंदिर परंपराओं को पुनर्जीवित करने के लिये संगीत नाटक अकादमी, **कला प्रवाह** की शृंखला के तहत, **9 अप्रैल 2024 से पवित्र नवरात्रि के दौरान 'शक्ति संगीत और नृत्य का उत्सव'** शीर्षक के तहत उत्सव का आयोजन कर रही है

मुख्य बिंदु:

शक्ति उत्सव का उद्घाटन कामाख्या मंदिर, गुवाहाटी **से शुरू होगा और यह महालक्ष्मी मंदिर, कोल्हापुर, महाराष्ट्र, ज्वालमुखी मंदिर, कंगड़ा, हिमाचल प्रदेश, त्रिपुरा सुंदरी, उदयपुर, त्रिपुरा, अंबाजी मंदिर, बनासकांठा, गुजरात, जय दुर्गा शक्तिपीठ, देवघर, झारखंड में जारी रहेगा तथा 17 अप्रैल, 2024 को शक्तिपीठ माँ हरसिधि मंदिर, उज्जैन, मध्य प्रदेश** में इसका समापन होगा

संगीत नाटक अकादमी

- **संगीत नाटक अकादमी संगीत, नृत्य और नाटक के लिये भारत की राष्ट्रीय अकादमी है।**
- वर्ष 1952 में (तत्कालीन) शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के एक प्रस्ताव द्वारा **डॉ. पी.वी. राजमन्नार को इसके पहले अध्यक्ष** के रूप में नियुक्त किया।
- यह वर्तमान में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार का एक **स्वायत्त निकाय** है और इसकी योजनाओं तथा कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिये सरकार द्वारा पूरी तरह से वित्तपोषित है।
- यह संगीत, नृत्य, नाटक, लोक और आदिवासी कला रूपों तथा देश के अन्य संबद्ध कला रूपों के रूप में व्यक्त देश के प्रदर्शन कला रूपों के **संरक्षण, अनुसंधान, प्रचार एवं कायाकल्प की दिशा में कार्य कर रहा है**

शक्ति - संगीत और नृत्य का उत्सव

चर्चा में क्यों ?

देश में मंदिर परंपराओं को पुनर्जीवित करने के लिये संगीत नाटक अकादमी, **कला प्रवाह** की शृंखला के तहत, **9 अप्रैल 2024 से पवित्र नवरात्रि के दौरान 'शक्ति संगीत और नृत्य का उत्सव'** शीर्षक के तहत उत्सव का आयोजन कर रही है

मुख्य बिंदु:

शक्ति उत्सव का उद्घाटन कामाख्या मंदिर, गुवाहाटी **से शुरू होगा और यह महालक्ष्मी मंदिर, कोल्हापुर, महाराष्ट्र, ज्वालमुखी मंदिर, कंगड़ा, हिमाचल प्रदेश, त्रिपुरा सुंदरी, उदयपुर, त्रिपुरा, अंबाजी मंदिर, बनासकांठा, गुजरात, जय दुर्गा शक्तिपीठ, देवघर, झारखंड में जारी रहेगा तथा 17 अप्रैल, 2024 को शक्तिपीठ माँ हरसिधि मंदिर, उज्जैन, मध्य प्रदेश** में इसका समापन होगा

संगीत नाटक अकादमी

- **संगीत नाटक अकादमी संगीत, नृत्य और नाटक के लिये भारत की राष्ट्रीय अकादमी है।**
- वर्ष 1952 में (तत्कालीन) शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के एक प्रस्ताव द्वारा **डॉ. पी.वी. राजमन्नार को इसके पहले अध्यक्ष** के रूप में नियुक्त किया।

नोट :

- यह वर्तमान में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार का एक **स्वायत्त निकाय** है और इसकी योजनाओं तथा कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिये सरकार द्वारा पूरी तरह से वित्तपोषित है।
- यह संगीत, नृत्य, नाटक, लोक और आदिवासी कला रूपों तथा देश के अन्य संबद्ध कला रूपों के रूप में व्यक्त देश के प्रदर्शन कला रूपों के **संरक्षण, अनुसंधान, प्रचार एवं कायाकल्प की दिशा में कार्य कर रहा है**

उज्जैन व्यापार मेले का प्रथम संस्करण

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में **उज्जैन व्यापार मेले** का पहला संस्करण संपन्न हुआ, जिसमें एक महीने में **23,700 से अधिक वाहन** बेचे गए, जिससे **1,200 करोड़ रुपए** से अधिक का कारोबार हुआ।

मुख्य बिंदु:

- **उज्जैन क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय (RTO)** के अनुसार, **40 दिनों तक चले उज्जैन व्यापार मेले** में बेचे गए वाहनों पर **कर छूट और राजस्व** 125 करोड़ रुपए से अधिक रहा।
  - यह फरवरी 2024 में संपन्न **ग्वालियर मेले** में दी गई कर छूट से 20% अधिक है।
- राज्य सरकार ने उज्जैन विक्रम व्यापार मेले में गैर-परिवहन वाहनों और हल्के परिवहन वाहनों की बिक्री पर **आजीवन मोटर वाहन कर की दर में 50% की छूट** की पेशकश की थी।
  - **गैर-परिवहन हल्के मोटर वाहन** कार की तरह निजी उपयोग के लिये होते हैं, जबकि हल्के परिवहन मोटर वाहनों का उपयोग यात्रियों और सामान ले जाने के लिये किया जाता है।

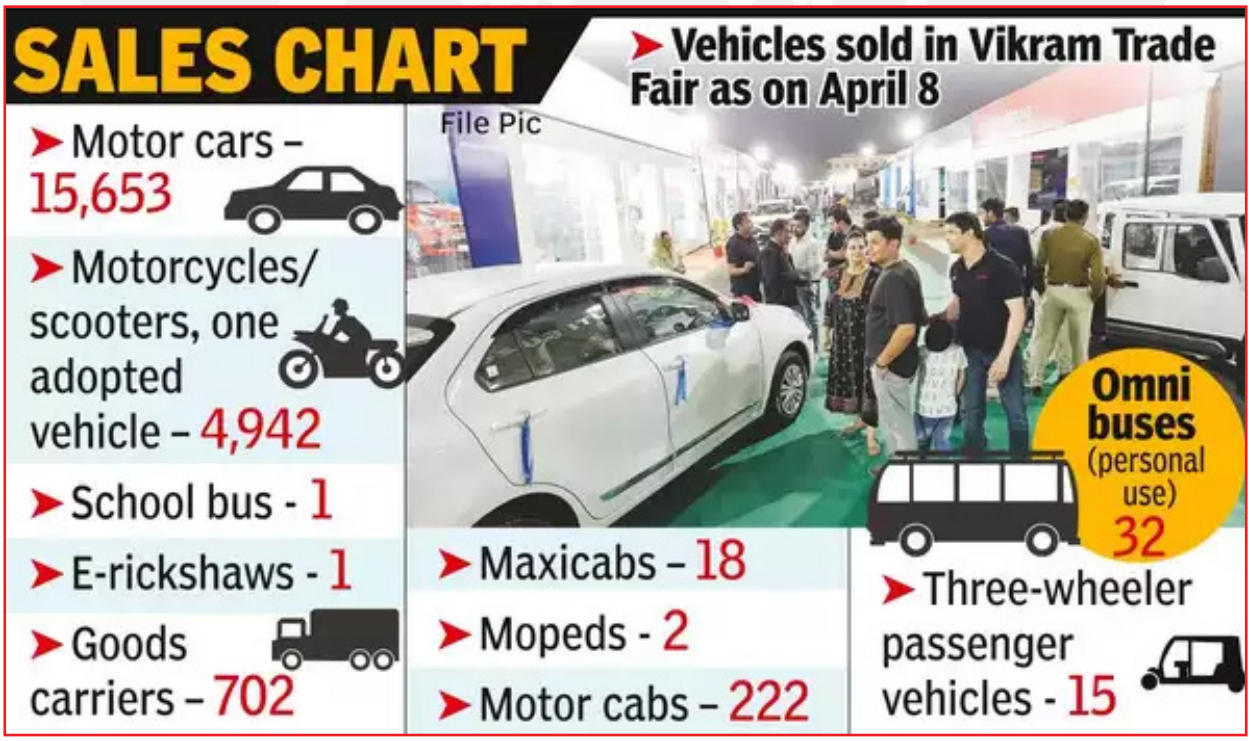

नोट :

गुड़ी पड़वा

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में लोगों ने हिंदू नववर्ष की शुरुआत के प्रतीक गुड़ी पड़वा के शुभ अवसर को खुशी और धार्मिक उत्साह के साथ मनाया।

मुख्य बिंदु:

- नौ दिवसीय **चैत्र शुक्ल प्रतिपदा** को भी श्रद्धालु निकले:
- यह **विक्रम संवत के नववर्ष** की शुरुआत का प्रतीक है जिसे **वैदिक [हिंदू] कैलेंडर** के रूप में भी जाना जाता है।
- विक्रम संवत् उस दिन पर आधारित है जब सम्राट विक्रमादित्य ने शकों को हराया, उज्जैन पर आक्रमण किया और एक नए युग का आह्वान किया।
- उनकी देखरेख में, खगोलविदों ने **चंद्र-सौर प्रणाली** पर आधारित एक नया कैलेंडर बनाया जिसका पालन आज भी भारत के उत्तरी क्षेत्रों में किया जाता है।
- यह **चैत्र (हिंदू कैलेंडर का पहला महीना)** में चंद्रमा के बढ़ते चरण (जिसमें चंद्रमा का दृश्य भाग हर रात बड़ा होता जा रहा है) के दौरान पहला दिन है।
- यह **चैत्र (हिंदू कैलेंडर का प्रथम महीना)** में चंद्रमा के बढ़ते चरण/शुक्ल पक्ष (जिसमें चंद्रमा का दृश्य भाग हर रात बड़ा होता जा रहा है) के दौरान प्रथम दिन है।

गुड़ी पड़वा और उगादि

- **तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक** के लोग नववर्ष को **उगादी** के रूप में मनाते हैं जबकि **महाराष्ट्र तथा गोवा** इस दिन का जश्न **गुड़ी पड़वा** के साथ मनाते हैं।
- दोनों त्योहारों/समारोहों में आम प्रथा है कि उत्सव में **भोजन मीठे और कड़वे मिश्रण** से तैयार किया जाता है।
- दक्षिण में **बेवु-बेला** नामक गुड़ (मीठा) और नीम (कड़वा) परोसा जाता है, जो यह दर्शाता है कि जीवन सुख तथा दुख का मिश्रण है।
- **गुड़ी महाराष्ट्र** के घरों में तैयार की जाने वाली एक गुड़िया है।
  - गुड़ी बनाने के लिये बाँस की छड़ी को हरे या लाल ब्रोकेड से सजाया जाता है। इस गुड़ी को प्रमुख रूप से घर में या खिड़की/दरवाज़े के बाहर सभी को दिखाने के लिये से रखा जाता है।
- **उगादि** के लिये घरों में दरवाज़े **आम के पत्तों** से सजाए जाते हैं, जिन्हें **कन्नड़ में तोरणालु या तोरण** कहा जाता है।

चतुर्थ वर्ष के UG छात्रों के लिये नया पाठ्यक्रम

चर्चा में क्यों ?

आगामी सत्र के साथ, **मध्य प्रदेश में उच्च शिक्षा विभाग (DHE) ने** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत अपना चौथा वर्ष शुरू करने वाले **स्नातक छात्रों के लिये एक नया पाठ्यक्रम तैयार किया है।**

मुख्य बिंदु:

- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति** को क्रियान्वित करने में मध्य प्रदेश भारत के अग्रणी राज्यों में से एक बन गया है।
  - राज्य में **स्नातक व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में 450,000 से अधिक छात्र** चौथे वर्ष में प्रवेश के लिये आवेदन कर सकते हैं यदि उनके पास **7.5 या उससे अधिक CGPA** है।
- DHE द्वारा विकसित नए पाठ्यक्रम के अनुसार, छात्र **अनुसंधान परियोजनाओं** के माध्यम से विभिन्न विषयों में विशेषज्ञता हासिल कर सकते हैं।
- चार-वर्षीय कार्यक्रमों पर स्विच करना उन छात्रों के लिये लाभदायक होने का अनुमान है जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आगे अध्ययन करने की योजना बना रहे हैं क्योंकि यह विदेश में विशिष्ट स्नातक पाठ्यक्रमों के लिये प्रवेश मानदंडों से मेल खाता है।

नोट :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति** 2020 भारत की उभरती विकास आवश्यकताओं से निपटने का प्रयास करती है।
- यह भारत की सांस्कृतिक **विरासत और मूल्यों** का सम्मान करते हुए **सतत् विकास लक्ष्य 4 (SDG4 4)** सहित 21वीं सदी के शैक्षिक लक्ष्यों के साथ संरेखित एक आधुनिक प्रणाली स्थापित करने हेतु अपने **नियमों एवं प्रबंध** सहित **शिक्षा प्रणाली के व्यापक बदलाव** का आह्वान करता है।
- यह चौंतीस वर्ष पुरानी **राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986, 1992 में संशोधित (NPE 1986/92) का स्थान लेती है।**

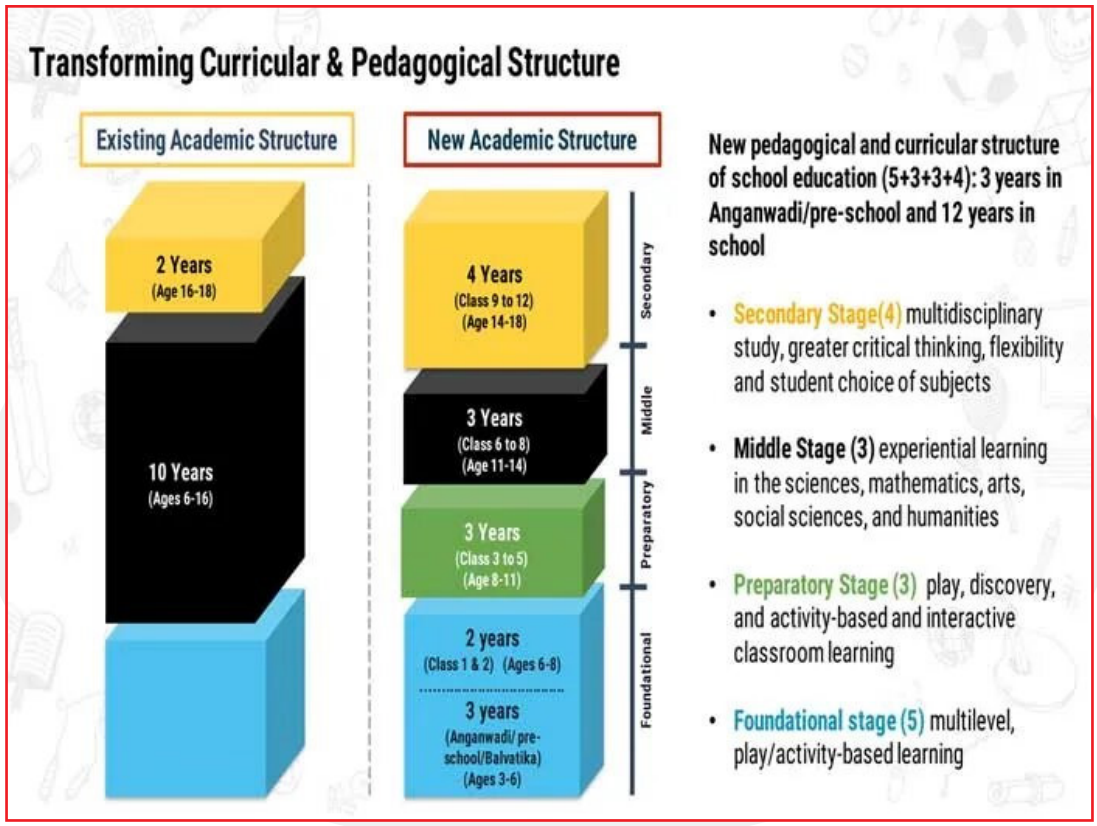

विश्व के सबसे बड़े फ्लोटिंग सोलर प्लांट को नुकसान

चर्चा में क्यों ?

मध्य प्रदेश के खंडवा ज़िले के ओंकारेश्वर बाँध पर स्थित विश्व के सबसे बड़े फ्लोटिंग सोलर प्लांट/संयंत्र को तूफान के कारण गंभीर क्षति हुई है।

मुख्य बिंदु:

- **नर्मदा हाइड्रोइलेक्ट्रिक डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (NHDC)** ने नुकसान का आकलन शुरू कर दिया है, लेकिन उसे विश्वास है कि संयंत्र जल्द ही विद्युत उत्पादन फिर से शुरू कर देगा।
  - नर्मदा हाइड्रोइलेक्ट्रिक डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (NHDC लिमिटेड) **मध्य प्रदेश सरकार और नेशनल हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड (NHPC लिमिटेड) के बीच एक संयुक्त उद्यम है।**
- ओंकारेश्वर बाँध के बैकवाटर पर निर्मित तैरती संरचना तैनाती के लिये पूरी तरह तैयार थी, जब हाल ही में गर्मियों के तूफान के दौरान 50 किमी. प्रति घंटे की तेज़ हवाओं ने इसे प्रभावित किया था।

नोट :

- ओंकारेश्वर बाँध के बैकवाटर में केलवा खुर्द में 100 मेगावाट, इंदावाड़ी में 88 मेगावाट और खंडवा गाँव में 90 मेगावाट क्षमता के संयंत्र लगेंगे।

ओंकारेश्वर बाँध

- यह **मध्य प्रदेश के खंडवा ज़िले** में मांधाता के ठीक ऊपर **नर्मदा नदी** पर एक गुरुत्वाकर्षण बाँध है।
- इसका नाम अनुप्रवाह (Downstream) में स्थित **ओंकारेश्वर मंदिर के नाम पर रखा गया है।**
- बाँध का निर्माण **वर्ष 2003 और 2007 के बीच** 132,500 हेक्टेयर (327,000 एकड़) की **सिंचाई के लिये जल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से किया गया था।**
- बाँध के आधार पर स्थित एक संबद्ध जल विद्युत ऊर्जा स्टेशन की स्थापित क्षमता 520 मेगावाट है।

स्वच्छता के प्रति जागरूकता

चर्चा में क्यों ?

मध्य प्रदेश के बुरहानपुर में एक स्वयं सहायता समूह की महिलाएँ घर-घर जाकर स्थानीय लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक कर रही हैं।

मुख्य बिंदु:

- नगर निगम ने **क्षेत्र के घरों में स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिये स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं को एक विशेष नौकरी की पेशकश** की है, इस कार्य के लिये उन्हें **₹100 का भुगतान** किया जाएगा।
- इस पहल के तहत **वैभव लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह** से जुड़ी महिलाएँ महाजनपेठ और शिकारपुरा जैसे इलाकों में घर-घर जाकर स्थानीय लोगों तक स्वच्छता से जुड़ी जानकारी पहुँचा रही हैं।

स्वयं सहायता समूह (SHG)

- ये उन लोगों के **अनौपचारिक संगठन** हैं जो **अपनी जीवन स्थितियों को बेहतर बनाने** के तरीके खोजने के लिये एकजुट होते हैं।
- इसे **समान सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले** और सामूहिक रूप से सामान्य उद्देश्य पूरा करने के इच्छुक लोगों के **स्व-शासित, सहकर्मी नियंत्रित सूचना समूह** के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।
- गाँवों को **गरीबी, अशिक्षा, कौशल की कमी, औपचारिक ऋण** की कमी आदि से संबंधित कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं से व्यक्तिगत स्तर पर नहीं निपटा जा सकता है और इसके लिये सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है।
- इस प्रकार SHG **गरीबों और हाशिये पर रहने वाले लोगों** के लिये बदलाव का माध्यम बन सकता है। **स्व-रोज़गार और गरीबी उन्मूलन को प्रोत्साहित करने के लिये** SHG **"स्वयं सहायता"** की धारणा पर निर्भर करता है।

मध्य प्रदेश में मौसम विभाग ने जारी की चेतावनी

चर्चा में क्यों ?

मध्य प्रदेश में मौसम विभाग ने **15 ज़िलों के लिये चेतावनी** जारी की है। पिछले कुछ दिनों में राज्य के विभिन्न इलाकों में तूफान, बारिश और ओलावृष्टि हुई है।

मुख्य बिंदु:

- पश्चिमी विक्षोभ, चक्रवाती परिसंचरण और ट्रफ लाइन के कारण प्रदेश में एक मज़बूत सिस्टम सक्रिय है। आने वाले दिनों में दो पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता और बढ़ सकती है। इसके चलते बारिश और ओलावृष्टि की आशंका है।
  - मौसम विभाग ने लोगों के लिये **एडवाइज़री भी जारी की** गई है।

नोट :

पश्चिमी विक्षोभ

- ये चक्रवाती **तूफानों की एक शृंखला** है जो **भूमध्यसागरीय क्षेत्र में उत्पन्न** होते हैं और **उत्तर पश्चिम भारत में सर्दियों के दौरान बारिश** के लिये 9,000 किमी. से अधिक के क्षेत्र कवर करते हैं।
  - पश्चिमी विक्षोभ **भूमध्य सागर**, **काला सागर** और **कैस्पियन सागर** से आर्द्रता एकत्र कर पश्चिमी **हिमालय से टकराने से पूर्व ईरान तथा अफगानिस्तान से होकर गुज़रता** है।
- पश्चिमी विक्षोभ **हिमपात का प्राथमिक स्रोत** है जो सर्दियों के दौरान **हिमालय के ग्लेशियरों की पूर्ति** करता है।
- ये ग्लेशियर **गंगा, सिंधु और यमुना** जैसी प्रमुख हिमालयी नदियों के साथ-साथ असंख्य पहाड़ी झरनों तथा नदों के जल के मुख्य स्रोत हैं।

मानसून गर्त/ट्रफ

- ट्रफ एक **बड़े क्षेत्र तक विस्तृत निम्न दाब की पेटी** है। यह ट्रफ मानसून काल के दौरान होती है, इसलिये इसे **मानसून ट्रफ** के नाम से जाना जाता है।
- मॉनसून ट्रफ **इंटर ट्रॉपिकल कन्वर्जेंस ज़ोन (ITCZ) का एक हिस्सा** है जहाँ उत्तरी गोलार्द्ध और दक्षिणी गोलार्द्ध की हवाएँ मिलती हैं।
- इसे आम तौर पर **मानसून के कम दाब वाले क्षेत्रों के स्थान को जोड़ने वाली रेखा** के रूप में दर्शाया जाता है। ये ट्रफ चरम मानसून अवधि के दौरान महाद्वीपों में चलते हैं।

सतपुड़ा टाइगर रिज़र्व में यूरेशियन ओटर रेडियो-टैग किया

चर्चा में क्यों ?

भारत में पहली बार, मध्य प्रदेश के **नर्मदापुरम** ज़िले में **सतपुड़ा टाइगर रिज़र्व (STR)** में एक **यूरेशियन ओटर/ऊदबिलाव** को रेडियो-टैग किया गया।

मुख्य बिंदु:

- भारत में आमतौर पर ऊदबिलाव की तीन प्रजातियाँ पाई जाती हैं- **स्मूद कोटेड ओटर, एशियन स्मॉल क्लॉड ओटर** और **यूरेशियन ओटर**।
- स्मूद कोटेड ओटर के अलावा वर्ष 2016 तक मध्य भारत में शेष दो ऊदबिलाव प्रजातियों की उपस्थिति का कोई साक्ष्य नहीं था, जब यूरेशियन ओटर को पहली बार STR में कैमरे में कैद किया गया था, जो मध्य भारत में ऊदबिलाव प्रजातियों के निवास स्थान के विस्तार को दर्शाता है।
- इस कमी को पूरा करने के लिये मध्य प्रदेश वन विभाग द्वारा **वन्यजीव संरक्षण ट्रस्ट (WCT)** के साथ साझेदारी में **वर्ष 2019 में सतपुड़ा में एक परियोजना शुरू की गई** थी।
  - इसका उद्देश्य एस्ट्रल फाउंडेशन और अल्काइल एमाइन्स फाउंडेशन के समर्थन से यूरेशियन ऊदबिलावों की पारिस्थितिकी का अन्वेषण करना तथा वन्य नदी पारिस्थितिकी तंत्र का पता लगाना है।
  - वन्यजीव संरक्षण ट्रस्ट मुंबई स्थित एक भारतीय गैर-लाभकारी संगठन है जिसे वर्ष 2002 में पंजीकृत किया गया था।

स्मूद कोटेड ओटर

- यह ऊदबिलाव की एक प्रजाति है। इसका वैज्ञानिक नाम **लुट्रोगेल पर्सपिसिलटा** (*Lutrogale perspicillata*) है।
- **स्थिति:**
  - ये **भारत से लेकर पूर्व** की ओर **पूरे दक्षिणी एशिया में** पाए जाते हैं।
  - **इराक के दलदलों** में भी एक अलग आबादी/जीव संख्या पाई जाती है।

नोट :

- **आवास:**
  - वे ज़्यादातर तराई क्षेत्रों, तटीय मैंग्रोव वनों, पीट दलदली वनों, अलवण जलीय आर्द्रभूमियों, बड़ी वन्य नदियों, झीलों और धान के खेतों में पाए जाते हैं।
  - कुछ ऊदबिलाव जल के निकट स्थायी बिल बनाते हैं जिसमें जल के अंदर प्रवेश द्वार और एक सुरंग होती है जो उच्च जल स्तर के ऊपर एक कोष्ठ तक जाती है।
  - हालाँकि जल में अनुकूलित, चिकनी बाह्य आवरण वाले ऊदबिलाव अर्थात् स्मूद कोटेड ओटर ज़मीन पर भी समान रूप से विचरण करते हैं और उपयुक्त आवास की तलाश में ज़मीन पर लंबी दूरी की यात्रा करते हैं।
- **संरक्षण की स्थिति:**
  - **IUCN रेड लिस्ट:** सुभेद्य

एशियन स्मॉल क्लॉड ओटर

- इसका वैज्ञानिक नाम एओनिक्स सिनेरियस (*Aonyx cinereus*) है।
- **स्थिति:**
  - इसकी एक विस्तृत वितरण शृंखला है, जो दक्षिण एशिया में भारत से लेकर पूर्व की ओर दक्षिण पूर्व एशिया और दक्षिणी चीन तक फैली हुई है।
  - भारत में ये ज़्यादातर पश्चिम बंगाल, असम और अरुणाचल प्रदेश के संरक्षित क्षेत्रों व कर्नाटक, तमिलनाडु एवं पश्चिमी घाट क्षेत्र में केरल के कुछ हिस्सों में पाए जाते हैं।
- वे मुख्य रूप से अलवण जलीय आवासों जैसे: नदियों, झरनों और आर्द्रभूमियों में पाए जाते हैं।
- ये मछली, क्रस्टेशियंस और मोलस्क पर भोजन के लिये आश्रित होते हैं।
- संरक्षण की स्थिति:
  - **वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972:** अनुसूची-I
  - **IUCN स्थिति:** सुभेद्य

यूरेशियन ओटर

- **परिचय:**
  - यह एक **अर्द्ध-जलीय मांसाहारी स्तनपायी** है।
  - इसका वैज्ञानिक नाम *लूट्रा लूट्रा (Lutra lutra)* है।
- **स्थिति:**
  - यह सभी **पुरापाषाण स्तनधारियों में सबसे व्यापक वितरणों** में से एक है।
  - इसकी सीमा तीन महाद्वीपों के हिस्सों को कवर करती है: यूरोप, एशिया और अफ्रीका।
  - भारत में, यह **उत्तरी, पूर्वोत्तर और दक्षिणी भारत** में पाए जाते हैं।
- **प्राकृतिक वास:**
  - यह विभिन्न प्रकार के जलीय आवासों में निवास करते हैं, जिनमें उच्चभूमि और तराई झीलें, नदियाँ, नद, दलदल, दलदली जंगल तथा तटीय क्षेत्र शामिल हैं।

नोट :

- भारतीय उपमहाद्वीप में, यूरेशियन ओटर ठंडी पहाड़ी क्षेत्रों और पहाड़ी नदियों में पाए जाते हैं।

- **संरक्षण की स्थिति:**
  - IUCN: संकटापन्न
  - वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972: अनुसूची-II
  - CITES: परिशिष्ट

मध्य प्रदेश में नदियों का प्रदूषण

चर्चा में क्यों ?

मध्य प्रदेश की कई **प्रमुख नदियों में** प्रदूषण बढ़ रहा है, जो **राज्य के पर्यावरणीय स्वास्थ्य के लिये गंभीर चिंता** का विषय है।

मुख्य बिंदु:

- पिछले 15 वर्षों में लोकसभा, विधानसभा और शहरी निकाय चुनावों में नर्मदा, क्षिप्रा तथा बेतवा जैसी प्रमुख नदियों की सफाई एक निरंतर मुद्दा रही है।
- नमामि गंगे मिशन और राष्ट्रीय नदी संरक्षण जैसी विभिन्न योजनाओं के कार्यान्वयन के बावजूद, क्षेत्रीय जन प्रतिनिधियों तथा ज़िम्मेदार अधिकारियों की रुचि एवं प्रतिबद्धता की कमी के कारण प्रदूषण का स्तर लगातार बढ़ रहा है।
- मध्य प्रदेश की जीवन रेखा मानी जाने वाली **नर्मदा नदी** की हालत विशेष तौर पर प्रदूषण के मामले में गंभीर है।
- नर्मदा के अलावा **माही, ताप्ती, काली सिंध, चंबल, पार्वती, धसान, केन, सिंध, कूनो, क्षिप्रा, बेतवा** और दक्षिण से गंगा में मिलने वाली सबसे बड़ी सहायक **सोन नदी** जैसी अन्य महत्त्वपूर्ण नदियों में भी हैं प्रदूषण के बढ़ते स्तर दर्ज किये गए हैं।

नमामि गंगे

- **नमामि गंगे कार्यक्रम** एक एकीकृत संरक्षण मिशन है, जिसे प्रदूषण के प्रभावी उन्मूलन और राष्ट्रीय नदी गंगा के संरक्षण एवं कायाकल्प के दोहरे उद्देश्यों को पूरा करने के लिये **जून 2014 में केंद्र सरकार द्वारा 'प्रमुख कार्यक्रम' के रूप में अनुमोदित** किया गया था।
- इसका संचालन **जल शक्ति मंत्रालय** के जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग के तहत किया जा रहा है।
- यह कार्यक्रम **NMCG** और उसके राज्य समकक्ष संगठनों यानी **राज्य कार्यक्रम प्रबंधन समूहों (SPMG)** द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है।
- **नमामि गंगे कार्यक्रम (2021-26) के द्वितीय चरण** में, राज्यों द्वारा विलंब को कम करते हुए, परियोजनाओं को तेज़ी से पूरा करने और गंगा के सहायक शहरों में परियोजनाओं के लिये बैंक योग्य विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (DPR) तैयार करने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।
  - छोटी **नदियों और आर्द्रभूमियों के पुनरुद्धार** पर भी ध्यान दिया जा रहा है।
  - भविष्य के लिये प्रत्येक गंगा ज़िले को कम-से-कम 10 आर्द्रभूमियों के लिये वैज्ञानिक योजनाएँ और स्वास्थ्य कार्ड विकसित करने होंगे तथा उपचारित जल व अन्य उप-उत्पादों के पुन: उपयोग के लिये नीतियाँ अपनानी होंगी।

राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना (National River Conservation Plan- NRCP)

- NRCP वर्ष 1995 में शुरू की गई एक **केंद्रीय वित्त पोषित योजना** है जिसका उद्देश्य नदियों के प्रदूषण को रोकना है।
- **राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना (NRCP)** और **राष्ट्रीय गंगा नदी बेसिन प्राधिकरण (NGRBA)** के तहत नदी संरक्षण के कार्यक्रम क्रियान्वित किये जा रहे हैं।
  - राष्ट्रीय गंगा परिषद्, जिसे राष्ट्रीय गंगा नदी कायाकल्प, संरक्षण और प्रबंधन परिषद् के रूप में भी जाना जाता है, ने NRGBA का स्थान ले लिया है।

नोट :

MP के यूनेस्को डिजिटल नवाचार

चर्चा में क्यों ?

विश्व धरोहर दिवस (18 अप्रैल) के उपलक्ष्य में, **मध्य प्रदेश पर्यटन** राज्य के संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (UNESCO) सूचीबद्ध और अस्थायी विरासत स्थलों में उल्लेखनीय तकनीकी प्रगति का नेतृत्व कर रहा है।

मुख्य बिंदु:

- ये प्रयास अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के माध्यम से आगंतुकों के अनुभव को बेहतर बनाने के लक्ष्य के साथ-साथ **धरोहर संरक्षण** के प्रति दृढ़ समर्पण को रेखांकित करते हैं।
- अपनी सांस्कृतिक समृद्धि और विविधता के लिये प्रसिद्ध, मध्य प्रदेश गर्व से **तीन यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों** का दावा करता है:
  - **खजुराहो स्मारक समूह** अपनी जटिल कामुक मूर्तियों के लिये प्रसिद्ध है;
  - **साँची के स्तूप** भारत की सबसे पुरानी पत्थर संरचनाओं में से एक हैं जो बौद्ध धर्म का प्रतीक हैं।
  - **भीमबेटका के प्रागैतिहासिक शैल** आश्रय प्रारंभिक मानव जीवन को दर्शाने वाले प्राचीन शैल चित्रों से सुसज्जित हैं।
- **इनके पूरक के रूप में अस्थायी सूची में 10 साइटें हैं, जिनमें शामिल हैं:**
  - जबलपुर में सुरम्य भेड़ाघाट-लमेता घाट, वास्तुकला की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण **मांडू समूह के स्मारक, भव्य मंदिरों और महलों से सुसज्जित ओरछा** का ऐतिहासिक समूह, **जैवविविधता से भरपूर** सतपुड़ा टाइगर रिज़र्व, ऐतिहासिक ग्वालियर किला, **खूनी भंडारा** की अभिनव जल प्रबंधन प्रणाली **बुरहानपुर,** प्राचीन कलात्मक अभिव्यक्तियों को प्रदर्शित करने वाले **चंबल घाटी के रॉक आर्ट साइट्स, भोजपुर में विशाल भोजेश्वर महादेव मंदिर,** सांस्कृतिक रूप से महत्त्वपूर्ण रामनगर तथा मंडला के **गोंड स्मारक** एवं मठवासी परंपराओं को दर्शाने वाला धमनार का ऐतिहासिक समूह।
- **उल्लेखनीय प्रगतियाँ:**
  - QR कोड-आधारित ऑडियो गाइड प्रमुख संग्रहालयों और स्मारकों पर गहन विवरण पेश करते हैं।
  - साँची, ओरछा, मांडू आदि सहित विभिन्न शहरों में मनोरम रोशनी और ध्वनि शो शुरू किये गए हैं।
  - ओकुलस उपकरणों के साथ संवर्धित एवं आभासी वास्तविकता (AR & VR) अनुभव, बेहतर सुविधा हेतु व्हाट्सएप का एकीकरण, सुव्यवस्थित पहुँच हेतु ऑनलाइन टिकट बुकिंग सिस्टम और राज्य के स्मारकों के सावधानीपूर्वक दस्तावेज़ीकरण तथा संरक्षण के लिये भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) मैपिंग।

खजुराहो समूह के स्मारक (1986)

- इन मंदिरों का निर्माण **चंदेल राजवंश** के दौरान किया गया था जो सन् 950 और 1050 के बीच अपने चरम पर था।
- मंदिरों की संख्या अब केवल 20 ही रह गई है जो दो अलग-अलग धर्मों - हिंदू धर्म और जैन धर्म से संबंधित हैं, जिनमें जटिल तथा सुंदर नक्काशीदार मूर्तियों से सजाए गए प्रसिद्ध **कंदारिया मंदिर** भी शामिल है।

भीमबेटका के रॉक शेल्टर (2003)

- ये शेल्टर स्थल **मध्य भारतीय पठार** के दक्षिणी किनारे पर **विंध्य पर्वतमाला की तलहटी** में स्थित हैं।
- प्राकृतिक रॉक शेल्टर के पाँच समूहों के रूप में खुदाई से प्राप्त चित्रों में मेसोलिथिक और उसके बाद के अन्य कालखंडों के चित्र प्रदर्शित हैं।
- आस-पास के क्षेत्रों के निवासियों की सांस्कृतिक परंपराएँ चित्रों में प्रदर्शित परंपराओं के समान हैं।

साँची में बौद्ध स्मारक (1989)

- यह वर्तमान में अस्तित्त्व में **सबसे पुराना बौद्ध अभयारण्य है** जो **12वीं शताब्दी तक** भारत में एक प्रमुख बौद्ध केंद्र था।
- इसके स्तंभों, प्रासादों, मंदिरों और मठों का निर्माण अलग-अलग राज्यों द्वारा **(अधिकांश पहली और दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में)** किया गया है।

नोट :

अश्वगंधा

चर्चा में क्यों ?

अश्वगंधा की लोकप्रियता भारत और विदेश दोनों में बढ़ रही है। यह एक **सदाबहार झाड़ी** है जो **भारत, अफ्रीका** और **मध्य पूर्व के कुछ हिस्सों में** पाई जाती है।

मुख्य बिंदु:

- **अश्वगंधा** (**Withania somnifera**) एक औषधीय जड़ी बूटी है। यह रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली औषधि के रूप में प्रतिष्ठित है।
- इसे **एडाप्टोजेन के रूप में वर्गीकृत** किया गया है, जिसका अर्थ है कि यह **शरीर में तनाव को प्रबंधित करने में मदद** कर सकता है।
- अश्वगंधा मस्तिष्क की कार्यक्षमता को भी बढ़ाता है और रक्त शर्करा को कम करता है, साथ ही चिंता तथा अवसाद के लक्षणों से लड़ने में मदद करता है।
- अश्वगंधा ने **तीव्र और दीर्घकालिक रुमेटाइड आर्थराइटिस यानी** संधिशोथ/गठिया जो व्यक्ति के जोड़ों में विकृति व विकलांगता पैदा करती है, दोनों के उपचार में नैदानिक सफलता दिखाई है।
  - **रुमेटीइड गठिया (RA)** एक ऑटोइम्यून रोग है जो आपके **पूरे शरीर में जोड़ों के दर्द और क्षति का कारण** बन सकती है।
  - ऑटोइम्यून रोग एक ऐसी स्थिति है जिसमें शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली अचेतन अवस्था में शरीर को प्रभावित करती है।
- अपने विशाल **जैव यौगिकों** के साथ **सख्त और सूखा प्रतिरोधी प्रजाति** होने के कारण, इसके उपयोग को हमेशा महत्त्व दिया जाता है तथा भारत के कई हिस्सों में, विशेष रूप से **मध्य प्रदेश** में, इसका एकाधिकार बना हुआ है।
  - यह **उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में शुष्क भागों** में उगता है। **राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र** और **मध्य प्रदेश** देश के **प्रमुख अश्वगंधा उत्पादक राज्य** हैं।
  - मध्य प्रदेश में इसकी कृषि 5000 हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में की जाती है।
- भारत में अश्वगंधा जड़ों का अनुमानित उत्पादन 1500 टन से अधिक है और वार्षिक आवश्यकता लगभग 7000 टन है, जिससे इसकी कृषि में वृद्धि तथा अधिक उत्पादन की आवश्यकता है।

भूमि संघर्ष पर वन अधिकार अधिनियम का प्रभाव

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में भारत में भूमि संबंधी संघर्षों को ट्रैक करने वाली डेटा अनुसंधान एजेंसी **लैंड कॉन्फ्लिक्ट वॉच** ने भूमि संघर्ष और वन अधिकार अधिनियम (FRA), 2006 के प्रवर्तन के बीच एक महत्त्वपूर्ण संबंध दर्ज किया गया है।

मुख्य बिंदु:

- **वर्ष 2006 में अधिनियमित FRA** वन में रहने वाले **जनजातीय समुदायों और अन्य पारंपरिक वन निवासियों के** वन संसाधनों के **अधिकारों को मान्यता** देता है, जिन पर ये समुदाय **आजीविका, निवास व अन्य सामाजिक-सांस्कृतिक आवश्यकताओं** सहित विभिन्न आवश्यकताओं **के लिये निर्भर** थे।
- लैंड कॉन्फ्लिक्ट वॉच (LCW) डेटाबेस में दर्ज 781 संघर्षों में से, 264 संघर्षों का एक उपसमूह **संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों** से निकटता से संबद्ध है जहाँ वन अधिकार अधिनियम (FRA) एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है।

नोट :

- **पीपुल्स फॉरेस्ट रिपोर्ट (विज्ञान और पर्यावरण केंद्र द्वारा)** के आधार पर इन निर्वाचन क्षेत्रों को आमतौर पर '**FRA निर्वाचन क्षेत्रों**' के रूप में जाना जाता है।
- महाराष्ट्र, ओडिशा और **मध्य प्रदेश** में **कोर FRA निर्वाचन क्षेत्रों** की **संख्या सबसे अधिक** है।
- **महत्त्वपूर्ण FRA निर्वाचन क्षेत्रों** में सबसे अधिक वन अधिकार मुद्दों वाले राज्य ओडिशा, छत्तीसगढ़ तथा केंद्रशासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर हैं।

FRA के कार्यान्वयन की स्थिति

- **प्रदान की गई उपाधियाँ:** फरवरी 2024 तक, **जनजातियों और वनवासियों को लगभग 2.45 मिलियन उपाधियाँ** प्रदान की गई हैं।
  - हालाँकि, प्राप्त **पाँच मिलियन दावों में से लगभग 34% खारिज़** कर दिये गए हैं।
- **मान्यता दर:** विशाल संभावनाओं के बावजूद, वन अधिकारों की वास्तविक मान्यता सीमित रही है। 31 अगस्त 2021 तक, FRA लागू होने के बाद से **वन अधिकारों के लिये पात्र न्यूनतम संभावित वन क्षेत्रों में से केवल 14.75% को ही मान्यता** दी गई है।
- **राज्य भिन्नताएँ:**
  - **आंध्र प्रदेश:** अपने न्यूनतम संभावित वन दावे का 23% मान्यता प्राप्त है।
  - **झारखंड:** अपने न्यूनतम संभावित वन क्षेत्र का केवल 5% ही मान्यता प्राप्त है
  - **अंतर-राज्य भिन्नताएँ:** राज्यों के भीतर भी मान्यता दरें भिन्न-भिन्न होती हैं। उदाहरण के लिये, ओडिशा में, जबकि नबरंगपुर ज़िले ने 100% IFR मान्यता दर हासिल की, संबलपुर की दर 41.34% है।

मध्य प्रदेश में विशिष्ट नस्ल की गायें

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में **मध्य प्रदेश** के मुख्यमंत्री ने विशेष रूप से आंध्र प्रदेश से लाई गई **एक जोड़ी पुंगनूर गायों** का स्वागत किया।

मुख्य बिंदु:

- पुंगनूर गाय आंध्र प्रदेश के चित्तूर ज़िले की मूल और वामन मवेशी नस्ल है। यह **विश्व की कूबड़ वाली मवेशियों की सबसे छोटी नस्लों में से एक** है।
- यह नस्ल **अनावृष्टि के प्रति उच्च आघातसह** है और यह कम गुणवत्ता वाले चारे पर भी अनुकूलित हो सकता है।
- इस नस्ल की गायों का **दूध भी बहुमूल्य** है, जिसमें उच्च वसा मात्रा होती है, जो इसे घी के उत्पादन के लिये आदर्श बनाती है।
  - एक पुंगनूर गाय प्रतिदिन लगभग 1 से 3 लीटर दूध दे सकती है और दूध में वसा की मात्रा 8% होती है, जबकि अन्य देशी नस्लों में यह 3 से 4% होती है।
  - इनका दूध **ओमेगा फैटी एसिड, कैल्शियम, पोटैशियम** और **मैग्नीशियम** जैसे पोषक तत्त्वों से भी भरपूर होता है।
- इसका **माथा चौड़ा और सींग छोटे** होते हैं। सींग **अर्द्धचंद्राकार** होते हैं जो प्राय: नर मवेशी में पीछे व आगे की ओर मुड़े होते हैं और मादा मवेशी में पार्श्व व आगे की ओर मुड़े होते हैं।

नोट :

- पुंगनूर गायों को **पर्यावरण के अनुकूल** माना जाता है, उन्हें **संकर नस्लों** की तुलना में **कम जल, चारा** और **स्थान** की आवश्यकता होती है।
- आंध्र प्रदेश के कई मंदिर, जिनमें प्रसिद्ध **तिरुपति तिरुमाला मंदिर** भी शामिल है, में **क्षीर अभिषेकम** (भगवान को दूध चढ़ाना) के लिये पुंगनूर गाय के दूध का प्रयोग किया जाता है।

मध्य प्रदेश में राष्ट्रीय उद्यान

चर्चा में क्यों ?

मध्य प्रदेश, जिसे प्राय: "भारत का हृदय" कहा जाता है, अपनी समृद्ध जैवविविधता और **प्राकृतिक परिदृश्य** के लिये प्रसिद्ध है। यह राज्य कुल 11 राष्ट्रीय उद्यानों का गढ़ है, जिनमें से प्रत्येक की **विशिष्ट पारिस्थितिकी तंत्र और वनस्पतियों एवं जीवों की एक विविध शृंखला** है।

नोट :

मुख्य बिंदु:

- घने वनों से लेकर विशाल घास के मैदानों तक, मध्य प्रदेश के राष्ट्रीय उद्यान विभिन्न प्रकार के वन्यजीवों को आवास प्रदान करते हैं, जिनमें बंगाल टाइगर, तेंदुए, **बारहसिंगा जैसी हिरण प्रजातियाँ** और **कई पक्षी प्रजातियाँ** शामिल हैं।
- ये उद्यान संकटग्रस्त प्रजातियों **के संरक्षण** में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और राज्य के **पर्यावरण-पर्यटन क्षेत्र** में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं।
- **बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान:**
  - **बंगाल टाइगर** के उच्च घनत्व के लिये प्रसिद्ध **बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान** भारत में सबसे लोकप्रिय **व्याघ्र अभयारण्यों में से एक** है। इसमें कई **अन्य वन्यजीव प्रजातियाँ** जैसे **तेंदुए, हिरण** और **कई पक्षी प्रजातियाँ** भी हैं।
- **कान्हा राष्ट्रीय उद्यान:**
  - अपने विविध वन्य जीवन और हरे-भरे मनोरम परिदृश्यों के लिये प्रसिद्ध, कान्हा राष्ट्रीय उद्यान ने **रुडयार्ड किपलिंग** की **"द जंगल बुक"** को प्रेरित किया। यह **बंगाल टाइगर्स** की बहुत बड़ी जीवसंख्या के साथ-साथ बारहसिंगा (स्वैम्प डियर) और हिरण की अन्य प्रजातियों के लिये प्रसिद्ध है।
- **डायनासोर जीवाश्म राष्ट्रीय उद्यान:**
  - **धार ज़िले** में स्थित, इस राष्ट्रीय उद्यान के क्षेत्र में लाखों वर्ष पूर्व विचरण करने वाले डायनासोर **के जीवाश्म अवशेष संरक्षित** हैं। आगंतुक जीवाश्म स्तरों का पता लगा सकते हैं और उन प्रागैतिहासिक जीवों के बारे में जान सकते हैं जो कभी इस क्षेत्र में अस्तित्त्व में थे।
- **घुघुवा जीवाश्म राष्ट्रीय उद्यान:**
  - **शाहपुरा** के पास स्थित, घुघुवा फॉसिल नेशनल पार्क जुरासिक काल के पादप जीवाश्मों के अपने बड़े संग्रह के लिये प्रसिद्ध है। पर्यटक यहाँ के चट्टानों में अच्छी तरह से संरक्षित जीवाश्मों को देख सकते हैं।
- **कुनो राष्ट्रीय उद्यान:**
  - प्रारंभ में इसे वर्ष **1981 में एक** वन्यजीव अभयारण्य **के रूप में स्थापित** किया गया था। यह **श्योपुर और मुरैना ज़िलों** में 344.686 वर्ग किमी. के क्षेत्र को कवर करता है। क्षेत्र के मुख्य शिकारी जंतुओं में **इंडियन लेपर्ड, दक्षिणपूर्व अफ्रीकी चीता, जंगली बिल्ली, स्लॉथ बियर, ढोले, इंडियन जैकल, इंडियन वुल्फ, स्ट्राइप्ड हायना और बंगाल फॉक्स शामिल** हैं। यहाँ पाए जाने वाले शाकाहारी जंतुओं में **चीतल, सांभर, नीलगाय, चौसिंगा, चिंकारा, ब्लैकबक और जंगली सूअर** शामिल हैं।
- **माधव राष्ट्रीय उद्यान:**
  - विंध्य रेंज (ग्वालियर ज़िला) में स्थित, माधव राष्ट्रीय उद्यान **हिरण, तेंदुए और विभिन्न पक्षी प्रजातियों** सहित अपनी विविध वनस्पतियों तथा जीवों के लिये प्रसिद्ध है। यह सुंदर **माधव सागर झील** से भी घिरा हुआ है।
- **पन्ना राष्ट्रीय उद्यान:**
  - यह बाघ संरक्षण में अपने प्रयासों के लिये प्रसिद्ध है और बड़ी बिल्ली की प्रजातियों की एक महत्त्वपूर्ण जीवसंख्या का निवास स्थान भी है। उद्यान में **हिरण, मृग और पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों** सहित समृद्ध जैवविविधता भी है।
- **पेंच राष्ट्रीय उद्यान:**
  - मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र की सीमा पर स्थित पेंच राष्ट्रीय उद्यान अपने **घने वनों तथा विविध वन्य जीवों के लिये प्रसिद्ध** है। पर्यटक बाघ, तेंदुए, स्लॉथ बियर और विभिन्न प्रकार की पक्षी प्रजातियों को देख सकते हैं।
- **संजय राष्ट्रीय उद्यान:**
  - **छत्तीसगढ़-मध्य प्रदेश सीमा क्षेत्र** में स्थित यह राष्ट्रीय उद्यान अपने प्राचीन वनों एवं विविध वनस्पतियों और जीवों के लिये जाना जाता है। यह **संजय-दुबरी टाइगर रिज़र्व का एक हिस्सा** है जो **बाघों, तेंदुओं और अन्य वन्यजीवों के लिये आवास** प्रदान करता है।

नोट :

- **सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान:**
  - इसकी विशेषता इसके **ऊबड़-खाबड़ क्षेत्र, गहरी घाटियाँ और घने वन** हैं। यह **जीप सफारी, नाव की सवारी और पैदल मार्गों** के माध्यम से वन भ्रमण का एक अनूठा अनुभव प्रदान करता है, जिससे **आगंतुकों को बाघ, तेंदुए तथा स्लॉथ बियर जैसे वन्यजीवों देखने का मौका** मिलता है।
- **वन विहार राष्ट्रीय उद्यान:**
  - **भोपाल में स्थित,** वन विहार राष्ट्रीय उद्यान एक अद्वितीय शहरी राष्ट्रीय उद्यान है जिसका उद्देश्य **शहरी सेटिंग के भीतर जैवविविधता का संरक्षण** करना है। यह **हिरण, बंदरों एवं पक्षियों** सहित जानवरों की विभिन्न प्रजातियों के लिये एक प्राकृतिक आवास प्रदान करता है, और आगंतुकों को प्रकृति की सैर तथा वन्य जीवों को देखने का आनंद लेने के लिये एक शांत वातावरण प्रदान करता है।

भोजशाला-कमाल मौला परिसर

चर्चा में क्यों ?

उच्च न्यायालय के निर्देश पर **भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI)** मध्यकालीन भोजशाला परिसर में वैज्ञानिक सर्वेक्षण कर रहा है। ASI द्वारा इस अभ्यास पूरा करने के लिये अतिरिक्त आठ सप्ताह की मांग की गई है।

- भोजशाला परिसर **मध्य प्रदेश के धार ज़िले** में स्थित है।

मुख्य बिंदु:

- हिंदू **ASI द्वारा संरक्षित 11वीं सदी** के स्मारक भोजशाला को **वाग्देवी (देवी सरस्वती)** को समर्पित मंदिर मानते हैं, जबकि **मुस्लिम समुदाय इसे कमल मौला मस्जिद कहता है।**
- 7 अप्रैल 2003 को ASI द्वारा की गई एक व्यवस्था के अनुसार, हिंदू मंगलवार को भोजशाला परिसर में पूजा करते हैं जबकि मुस्लिम शुक्रवार को परिसर में नमाज़ अदा करते हैं।
- **उच्च न्यायालय** ने 11 मार्च 2024 को **ASI** को छह सप्ताह के भीतर भोजशाला-कमाल मौला मस्जिद परिसर का **"वैज्ञानिक सर्वेक्षण" करने का आदेश दिया था।**
- ASI के अनुसार, वैज्ञानिक उपकरणों का उपयोग करके परिसर और उसके परिधीय क्षेत्र का विस्तृत सर्वेक्षण जारी है। टीम पूरे स्मारक का विस्तृत दस्तावेज़ीकरण कर रही है।
  - उत्खनन जो कि एक बहुत ही व्यवस्थित एवं धीमी प्रक्रिया है, प्रगति पर है। इसकी संरचनाओं के उजागर हिस्सों की प्रकृति को समझने के लिये अधिक समय की आवश्यकता होगी।
  - स्मारक की बारीकी से जाँच करने पर यह पाया गया कि प्रवेश द्वार बरामदे में बाद में भराव संरचना की मूल विशेषताओं को छिपा रहा है और इसे हटाने का कार्य मूल संरचना को कोई नुकसान पहुँचाए बिना बहुत सावधानी से किया जाना है जो एक धीमी तथा समय लेने वाली प्रक्रिया है।
- ASI ने **राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान (NGRI)** से **ग्राउंड-पेनेट्रेटिंग रडार (GPR) सर्वेक्षण** करने का अनुरोध किया है।
  - NGRI की एक टीम और उनके वैज्ञानिक उच्च न्यायालय द्वारा पारित निर्देशों का सख्ती से पालन करते हुए नियमित रूप से पूरे क्षेत्र का सर्वेक्षण कर रहे थे।

नोट:
राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान (NGRI) एक भूवैज्ञानिक अनुसंधान संगठन है जिसकी स्थापना वर्ष 1961 में **वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (CSIR)** के तहत की गई थी।

ग्राउंड-पेनेट्रेटिंग रडार (GPR)

- ASI द्वारा भूमि में दबे पुरातात्त्विक विशेषताओं का 3-D मॉडल तैयार करने के लिये GPR तकनीक का प्रयोग किया जाता है।

नोट :

- उपसतह से परावर्तित संकेतों के समय और परिमाण को रिकॉर्ड करने के लिये GPR एक सरफेस एंटीना के माध्यम से एक संक्षिप्त रडार आवेग प्रसारित करता है।
- रडार किरणें एक शंकु की आकार में फैलती हैं, जिससे बनने वाले प्रतिबिंब प्रत्यक्ष तौर पर भौतिक आयामों के अनुरूप नहीं होते हैं।
- रडार किरणें एक शंकु में फैलती हैं, जिससे ऐसे प्रतिबिंब बनते हैं जो सीधे भौतिक आयामों के अनुरूप नहीं होते हैं, जिससे आभासी प्रतिबिंब बनती हैं।

मध्य प्रदेश क्रूज़ पर्यटन को बढ़ावा देगा

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में **मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड** ने मध्य प्रदेश में **क्रूज़ पर्यटन** को बढ़ाने के लिये **भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण (IWAI)** और गुजरात सरकार के साथ एक **समझौता ज्ञापन (MoU)** पर हस्ताक्षर किये हैं।

मुख्य बिंदु:

- इस सहयोग के तहत, राज्य में कोलकाता से कुक्षी तक **पोंटून के नाम से जाने जाने वाले दो फ्लोटिंग जेटी** भेजे गए हैं।
- प्रस्तावित क्रूज़ मार्ग **मध्य प्रदेश के ओंकारेश्वर** में **एकात्म धाम (स्टैच्यू ऑफ वननेस)** से शुरू होने और **गुजरात के केवडिया में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी** तक यात्रा करने के लिये निर्धारित है।
- MoU में उल्लिखित शर्तों के अनुसार, IWAI मध्य प्रदेश और गुजरात दोनों को दो फ्लोटिंग जेटी प्रदान करने के लिये प्रतिबद्ध है।
- राज्य सरकार द्वारा **क्रूज़ पर्यटन के लिये अतिरिक्त बुनियादी ढाँचे और सुविधाओं का विकास किया जाएगा,** जिससे क्षेत्र में आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा तथा स्थानीय आबादी को लाभ मिलेगा।
- **क्रूज़ पर्यटन** न केवल **पर्यटन परिदृश्य को समृद्ध करने** का वादा करता है, बल्कि पर्यटकों को **नर्मदा नदी** के प्राकृतिक दृश्यों के बीच स्थानीय संस्कृति, परंपराओं, जीवन शैली और व्यंजनों का एक व्यापक अनुभव भी प्रदान करता है।

नर्मदा नदी

- **नर्मदा नदी (जिसे रीवा** के नाम से भी जाना जाता है) उत्तर और दक्षिण भारत के बीच एक पारंपरिक सीमा के रूप में कार्य करती है।
- यह मैकल पर्वत के **अमरकंटक शिखर** से पश्चिम की ओर 1,312 किमी. प्रवाहित होते हुए **खंभात की खाड़ी** में मिलती है।
- यह महाराष्ट्र और गुजरात राज्यों के कुछ क्षेत्रों के अलावा मध्य प्रदेश के एक बड़े क्षेत्र में जल प्रवाहित करती है।
- **यह प्रायद्वीपीय क्षेत्र की पश्चिम की ओर प्रवाहित होने वाली** नदी है जो उत्तर में विंध्य पर्वतमाला तथा दक्षिण में सतपुड़ा पर्वतमाला के बीच एक दरार घाटी से होकर बहती है।
- **सहायक नदियाँ:**
  - **दाहिनी ओर से प्रमुख सहायक नदियाँ हैं**- हिरन, तेंदोरी, बरना, कोलार, मान, उरी, हटनी और ओरसांग।
  - **प्रमुख बाईं सहायक नदियाँ हैं**- बर्नर, बंजार, शेर, शक्कर, दूधी, तवा, गंजाल, छोटा तवा, कुंडी, गोई और कर्जन।
- **बाँध:**
  - नदी पर बने प्रमुख बाँधो में ओंकारेश्वर और महेश्वर बाँध शामिल हैं।

✦ ✦ ✦ ✦

नोट :